झरोखे

OSMANIA UNIVERSITY

कहानी

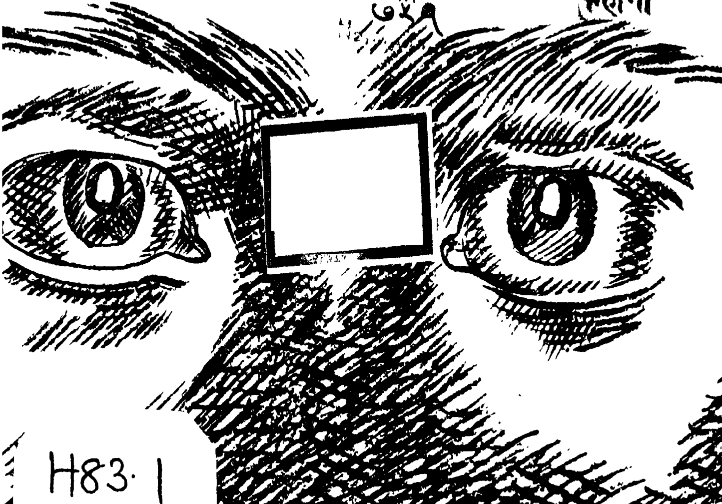

H83.1
S9AJ

सुदर्शन

UNIVERSAL LIBRARY
OU_178581
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83·1 S94J

Accession No. P.G. H751

Author सुदर्शन

Title झरोखे 1944.

This book should be returned on or before the date last marked below.

झरोखे

झरोखे

[जगत और जीवन की कुछ झाँकियाँ]

सुदर्शन

हिन्द किताब्स लिमिटेड
२६१—२६३ हार्नबी रोड, बम्बई

COPYRIGHT 1947 BY SUDARSHAN

पहला संस्करण
जुलाई १९४७

मूल्य १॥)

मुद्रकः—जयराम दिपाजी देसाई, राष्ट्रवैभव प्रेस, गिरगांव, बम्बई
प्रकाशकः—वी. कुलकर्णी, हिन्द किताब्स लिमिटेड,
२६१—२६३ हार्नबी रोड, बम्बई

भूमिका

लोग कहते हैं, कि आदमीका मन आदमीके अंदर रहता है। मगर मैं कहता हूं, कि आदमीका मन आदमीके अंदर नहीं रहता, आदमी अपने मनके अंदर रहता है।

और लोग कहते हैं, कि आदमी अपने मनसे बड़ा है। मगर मैं कहता हूं कि आदमी अपने मनसे बड़ा नहीं, आदमीका मन आदमीसे बड़ा है।

और आदमी अपने मनके अंदर रहता है और मनकी बातें सुनता है, और मनकी बातें बोलता है। और उसे अपने मनके रास्ते अमन और सलामतीके रास्ते नज़र आते हैं।

इस मनके कई झरोखे हैं। मगर यह झरोखे प्रायः बन्द रहते हैं, । और मनके अंदर अँधेरा रहता है। यह मनके रास्ते तंग और गहरे हैं और वहांकी धरतीपर घास नहीं उगती। न वहां के आसमानपर सूरज चमकता है।

और आदमी इन रास्तोंपर ठोकरें खाता है, मगर उसे यह ठोकरें बुरी नही लगतीं। और जब उसका खून अँधेरेकी धरतीपर टपकता है, तो वह, दुखी नहीं होता; और जब उसकी टीस उसके घुटनोंका घाव बन जाती है तो उसे यह घाव दिखाई नहीं देते, न उस टीससे उसकी आंखोंमें आंसू आते हैं।

फिर कभी कभी ऐसा भी होता है, कि आदमीका आत्मा इस अँधेरेमें घबरा जाता है, और वह मनके झरोखे खोल लेता है।

तब मनके अंदर रोशनी आ जाती है, और सोए हुए रास्ते जाग उठते हैं।

और आदमी इस रोशनी में ऐसी चीजें देखता है, जो उसने पहले कभी न देखी थीं, और वह ऐसी आवाजें सुनता है, जो उसने पहले कभी न सुनी थीं।

और आदमीको पहली बार मालूम होता है, कि रोशनी क्या चीज़ है, और खुली हवा के क्या अर्थ हैं, और चौड़े रास्तोंपर चलकर ज़िन्दगीको कैसी खुशी मिलती है।

अब आदमीको हैरानी होती है, कि वह अपने मनके अँधेरे और गहराइयोंमें इतनी मुद्दत कैसे सोता रहा, और उसका आत्मा इस अँधेरे और इन गहराइयों के संकटोंको कैसे सहता रहा?

मगर जब वह मुड़कर अपने मनकी तरफ़ देखता है, तो अब उसे वहाँ भी रोशनी दिखाई देती है। और वह देखता है कि अब वहां भी सूरज चमकता है, और अब वहांके रास्ते भी चौड़े हैं, और अब वहां की धरतीपर भी घास उगती है!

और आदमी कहता है, मुबारक हैं यह झरोखे, जिन्होंने मेरे रास्ते चौड़े किए और इनका अँधेरा हटाया, और इनको चलनेके योग्य बनाया।

माहिम—बम्बई
१६ जुलाई १९४७

सुदर्शन

सूची

१	देवताओं का जन्म	...	१
२	परदे ...	...	३
३	दो पंडित ...	...	५
४	दो पगले ...	...	७
५	तीन क़हक़हे ...	...	१०
६	तिनका और तूफ़ान	...	१२
७	एक शब्द का विकास	...	१६
८	मेरी बड़ाई ...	...	१९
९	सन्तान ...	...	२०
१०	बहन भाई ...	...	२२
११	ऊँट, चींटी और पहाड़	...	२३
१२	जोतनगर की जवानी	...	२४
१३	पनघट पर ...	....	२७
१४	सुपने ...	...	२९
१५	मेरी हार ...	...	३१
१६	मेरी जीत ...	...	३३

१७	मनचला	३६
१८	आज और कल ...	३८
१९	कबीर की पहचान ...	४०
२०	कालिदास	४२
२१	जब मैं बच्चा था	४३
२२	जब मैं जवान हुआ ...	४५
२३	जब मैं बुड्ढा हुआ ...	४७
२४	चोर	५०
२५	गुलाम	५१
२६	तिवारी का तोता ...	५२
२७	सच की मौत	५७
२८	मज़दूर	५९
२९	धर्मोपदेशक	६३
३०	आकाश का बेटा ...	६५
३१	दुनियादार	६७
३२	राजा	६९
३३	मेरे तीन जन्म	७१
३४	अहँकार	७२
३५	चार कलाकार	७३
३६	झूठ और सभ्यता ...	७५
३७	साए	७८

देवताओं का जन्म

दुनियाके शुरूमें मन्दिर नहीं थे, देवता नहीं थे, भय नहीं था।

और लोग शांतिप्रिय थे, और सत्यवक्ता थे, और वीरात्मा थे।

मगर उनमें से एक आदमी चालाक था, और एक और आदमी मूर्ख था। और चालाक आदमी सुस्त था, और मूर्ख की बाँहोंमें शिकार मारनेकी और ज़मीनसे मिट्टी खोदने की अथाह ताक़त थी।

और एक बार ऐसा हुआ, कि आधी रातके अँधेरेमें दोनोंकी मुलाक़ात हो गई।

और दूसरे दिन नदीके किनारे मन्दिर था, मन्दिरमें देवता थे, देवताओंमें न समझमें आनेवाली शक्ति थी।

और वह दोनों आदमी जो आधी रातके अँधेरेमें मिले थे, अब दोपहरके समय मन्दिरमें पहुंचे।

एक ने डरते डरते अपनी मेहनतसे पैदा किए हुए फल, और अपने हाथकी बनाई हुई मिठाइयां देवताओंके सामने रखीं, और नमस्कार करके उलटे पांव वापस चला आया।

दूसरे ने आगे बढ़कर नज़र-भेंटकी यह चीज़ें उठाकर खा लीं, और इसके बाद पांव फैलाकर वहीं सो गया।

परदे

सात समुद्रोंके परे आठवाँ समुद्र है। और इसके बीचमें एक टापू है, जिसका नाम आजतक दुनियाने नहीं सुना और इस टापूमें एक आदमी है, जिसे आजतक दुनियाके किसी बेटेने नहीं देखा।

और जब परमात्माने उसे पैदा किया तो उसके साथ कई परदे भी पैदा किए, और उनपर मोहरें लगा दीं, और आदमी से कहा—"यह परदे न फाड़ना, यह परदे तेरी खुशियाँ हैं।"

और जब उस टापूपर रातका अँधेरा फैल जाता था, तो उन परदोंके पीछेसे प्रकाश छन छनकर निकलता था, और आदमी उस प्रकाशमें अपने रास्ते ढूंढ लेता था। और जब दिनके समय आदमी उदास हो जाता था, तो उन परदोंके पीछेसे कोई गाता था, और इन गीतोंसे आदमीकी उदासियां दूर हो जाती थीं।

मगर आदमीके दिलमें हैरानी पैदा हुई, और उस हैरानी ने कहा—"पता नहीं इन परदोंके अंदर क्या है, जो तेरे अँधेरोंमें चमकता है, और जो तेरी उदासियोंमें गाता है।"

आदमीने अपनी हैरानीकी बात सुनी और उन परदोंको फाड़ डाला। और उनके अंदरसे ज़मीनोंका सोना, और समुद्रों के मोती, और आसमानोंके तारे निकले। और आदमी अपने मनमें खुश हुआ, कि मुझे यह खुशीकी चीज़ें मिल गई हैं।

मगर जब रात हुई, तो उनमें उनका प्रकाश न था, और जब दिन निकला, तो उनमें उनके गीत न थे।

अब वह आदमी अपना सिर पत्थरोंपर पटकता है, और चाहता है, कि वह परदे फिरसे सिल जाएं, और वह मोहरें फिरसे लग जाएं। मगर परदे सिलते नहीं, मोहरें लगती नहीं। और आदमी रोता है।

दो पंडित

एक दिन मन्दिरकी सीढ़ियोंपर दो पंडितोंकी मुलाक़ात हो गई।

एक बोला—"जीवन इतना लम्बा है, जितनी यह दुनिया।"

दूसरे ने जवाब दिया—"जीवन इतना छोटा है, जितनी कमलके पत्ते पर पड़ी हुई ओसकी बूंद।"

सुननेवालोंने कहा—"यह कितने बड़े हैं!"

मन्दिरका घड़ियाल बजने लगा। दोनों पंडित अंदर चले गए। वापसीपर दोनोंकी फिर मुलाक़ात हुई।

एक बोला—"दिल इतना बड़ा है, जितना ज़मीनके ऊपर छाया हुआ आसमान।"

दूसरे ने जवाब दिया—"दिल इतना छोटा है, जितना सूई का नाका।"

सुननेवालोंने कहा—"यह दोनों कितने गहरे हैं!"

और मन्दिरके बड़े पुजारीने बाहर आकर कहा—"मैं अब बूढ़ा होगया हूं, और मुझे देवीकी पूजा करनेके लिए दो पुजारियोंकी ज़रूरत है। एक वह जिसने जीवनको जाना हो, दूसरे वह जिसने मनको मापा हो।"

दोनों पंडित भीड़में ग़ायब हो गए।

देखनेवालोंने कहा—"यह दोनों कितने विनयशील हैं!"

और थोड़ी देर बाद शहरके चौकमें दोनों पंडितों की फिर मुलाक़ात हो गई।

एक बोला—"हमने लोगोंको कैसा मूर्ख बनाया?"

दूसरेने जवाब दिया—"हमने अपने आपको कैसा मूर्ख सिद्ध किया!"

सुननेवालोंने कहा—"यह लोग कैसे विनोदप्रिय हैं!"

दो पगले

कवि और तार्किक उसकी खोजमें निकले, जो महान है, और जो लोगोंके सामने नहीं आता।

सुबह के समय सूरजने अपने चेहरेसे अँधेरा उठाया, और अपने प्रकाशकी बाँहें फैलाकर सुबह की अंगड़ाई ली।

दुनियामें सोई हुई ज़िंदगीने आंखें खोल दीं, और उठ बैठी और चलने लगी।

कवि के होंटोंपर मुस्कराहट आ गई। और उसने धीरेसे कहा—"मैंने उसे देख लिया।"

मगर तार्किकको कोई चीज़ दिखाई न दी।

दोपहर के समय दोनों को प्यास लगी। मगर उनके ऊपर धूप थी, नीचे गरम रेत थी, आसपास गरम हवा के थपेड़े थे। और उनकी हिम्मत उनके पाँव तले दम तोड़ रही थी।

थोड़ी देर बाद वह पेड़ों के एक झुंडमें पहुँच गए।

और वहाँ उन्होंने पंछियोंकी बोलियाँ सुनीं और ठंडे और मीठे जलका न समाप्त होनेवाला झरना देखा, जो कुछ ही दूर जाकर रेतमें समा जाता था।

कविकी आंखोंमें चमक आ गई, और उसने अपने शरीर और आत्माकी सारी शक्तियोंसे चिल्लाकर कहा—"मैंने उसे देख लिया।"

मगर तार्किक को कोई चीज़ नज़र न आई।

रातको वह दोनों एक ज्योतिषी की छतपर बैठे थे, और ज्योतिषी उन्हें चाँद तारों की कहानियां सुना रहा था, और वह हैरान हो रहे थे। और ज्योतिषी ने कहा—"ज़रा सोचो, कई तारे हमसे इतनी दूर हैं, कि जब उनकी रोशनी हमारी दुनिया के लिए रवाना हुई, उस समय हमारे बापदादा भी पैदा न हुए थे, और वह रोशनी हमारे पास आज पहुंचती है।"

कविने अचरज भरी आंखोंसे आसमानके अमर दीपकोंकी तरफ़ देखा, और तार्किक से कहा—"मैंने उसे देख लिया।"

मगर तार्किक को कोई चीज़ दिखाई न दी।

कुछ दिन बाद जब दोनों अपने गाँवको लौटे, तो उनके गाँववालों ने उन्हें घेर लिया, और पूछा—"तुमने इस

खोजकी यात्रामें क्या देखा।"

कविने कहा—"मैंने केवल उसे देखा, और कुछ नहीं देखा।"

तार्किक ने कहा—"मैंने और सब कुछ देखा, केवल उसे नहीं देखा।"

और लोगोंने कहा—"यह दोनों एक साथ गए थे, एक साथ लौटे हैं, एक ही रास्तेपर चले हैं, मगर फिर भी दोनोंकी राएं नहीं मिलतीं। इस लिए यह दोनों पगले हैं।"

'तीन क़हक़हे

एक बार एक लेखकने बिना सोचे–समझे, और बिना मेहनत किए एक दिन में पूरी किताब लिख डाली। और यह किताब इतनी निरर्थक थी, कि लेखक को खुद हैरानी हुई और उसने अपनी मूर्खतापर एक क़हक़हा लगाया।

लेकिन अभी यह क़हक़हा समाप्त न हुआ था, कि एक प्रकाशक उसके पास आया, और बोला—"मैं प्रकाशक हूं, और मैंने आपकी तारीफ़ सुनी है। अगर आपने कोई नई किताब लिखी हो, तो मुझे दीजिए। मैं छापूंगा।"

लेखक ने हंसी हंसी में वह किताब प्रकाशक के हाथ में रख दी। प्रकाशक ने कुछ पन्ने पढ़े, और उसे वह किताब पसंद आई, और वह उसे छापने के लिए ले गया।

और जब वह चला गया, तो लेखक को और भी हैरानी हुई, और उसने दूसरा क़हक़हा प्रकाशककी मूर्खतापर लगाया।

और प्रकाशकने किताब छाप दी, और समालोचकोंने उसमें प्रतिभा और प्रकाश देखा, और उसकी शानमें प्रशंसाके प्यारे प्यारे शब्द लिखे ।

और छः महीनेके अंदर अंदर किताब की बीस हज़ार प्रतियां बिक गईं ।

जब लेखक को यह समाचार मिला, तो उसे और भी हैरानी हुई, और उसने तीसरा क़हक़हा लोगोंकी मूर्खतापर लगाया ।

तिनका और तूफ़ान

तिनकेने पेड़से कहा—"मैंने दूरसे तूफ़ान की आवाज़ सुनी है, और दूरसे उसे इस तरफ़ आते देखा है, और मैं जानता हूं, मैं उसमें गुम होकर रह जाऊंगा। तू बड़ा है, और मैं तेरे सामने बहुत छोटा हूं, और बड़ोंका धर्म है, कि छोटों की रक्षा करें। क्या तू मुझे आश्रय देगा?"

पेड़ने खुशामदके यह मीठे शब्द सुने, और झूमकर जवाब दिया—"मैंने तुझे आश्रय दिया। मेरे तनेके साथ लिपट जा, और निश्चिंत रह तूफ़ान तुझे ज़रा नुकसान न पहुंचा सकेगा।"

तिनका पेड़के साथ लिपट गया, और सोचने लगा—"अब मैं इतने बड़े और इतने मज़बूत पेड़के साथमें हूं। अब मुझे तूफ़ानका क्या भय है?"

और तूफ़ानने आकर उस बड़े पेड़को देखा, और कहा—"या मेरे सामनेसे हट जा, या मेरे साथ चल, या मरने को

तैयार हो जा। तेरे लिए चौथा कोई रास्ता नहीं है।"

पेड़ने तूफ़ान की धमकीको घृणासे सुना, और क्रोधसे काँप कर जवाब दिया—"तू देख, और जान कि मैं इस जगह बहुत बरसोंसे खड़ा हूं, मेरी जड़ें धरतीके दिलमें बहुत गहरी खुदी हुई हैं और मेरा फैलाव देखकर दुनिया धमंडकी गरदन झुका देती है। और तुझमें फिर भी इतनी हिम्मत है, कि मुझे धमकियां दे, और मुझे जीतनेके सुपने देखे।

"अगर तू चुप-चाप अपने रास्तेपर चला जाता, तो मैं तुझे रोकने को ज़रूरत न समझता, और तुझे अपने इलाकेसे निकल जानेकी आज्ञा दे देता। मगर अब तूने मेरे अभिमानको ललकारा है। अब मेरा अभिमान तुझे रोकेगा, और तू यहींसे वापस जाकर दूसरे तूफ़ानोंसे कहेगा, कि अपने लिए दूसरे रास्ते की खोज करो, यह रास्ता तूफ़ानोंके लिए बंद है।"

सारी रात तूफ़ान और पेड़की लड़ाई होती रही। सारी रात तिनका डरता, काँपता, थरथराता रहा, और अपने मनमें मनौतियां मानता रहा, कि पेड़ जीत जाए, तूफ़ान हार जाए। मगर जब रात बीत गई, और दिनकी रोशनी ज़मीनपर फैली, तो तिनके ने देखा कि उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई। पेड़ अपने गहराव और फैलाव के साथ ज़मीनकी मिट्टीपर पड़ा था, और तूफ़ान सामने खड़ा गरजता था, और कहता था—"ज़रा उसका हाल देखो, जो अपने

आप को बड़ा कहता था। जिसकी जड़ें धरती के दिलमें गहरी गड़ी थीं। जिसका फैलाव देखकर दुनिया अपने घमंडकी गरदन झुका देती थी।"

इसके बाद तूफ़ानने तिनके की तरफ़ देखा और कहा—"तू तिनका है। मैं तूफ़ान हूं। मैं तुझे धमकियां देता अच्छा मालूम नहीं होता। न मैं तुझपर ज़बरदस्ती करना चाहता हूं, क्योंकि तू मेरे सामने तुच्छ और छोटा है।

"मैं तुझसे सिर्फ़ यह पूछता हूं, कि तेरा इरादा क्या है? अगर तू इस लाश के साथ लिपटा रहेगा, तो तेरी जगह चूल्हे की आगमें होगी। अगर मेरा साथ देगा, तो तेरी जगह आसमानकी ऊंचाइयोंमें होगी।"

तिनके ने जवाब दिया—"मैं जानता हूं, तू मुझे मार डालेगा। मगर मुझमें हिम्मत नहीं, कि तेरी ताक़तके सामने खड़ा हो सकूं। और मैंने यह देख लिया है, कि जो तेरे सामने खड़ा होता है, वह मिट जाता है।"

यह कहकर तिनके ने अपने आप को पेड़से अलग किया, और तूफ़ान के पांवमें झुक गया। और दूसरे क्षणमें वह ऊंचे आकाशमें उड़ रहा था। ज़मीन उसके नीचे थी, और बड़े बड़े भवन उसके नीचे थे, और ऊंचे ऊंचे मीनार उसके नीचे थे।

और तिनकेने देखा, कि वह अब भी मरा नहीं, बल्कि जीता-जागता है। और उसने अनुभव किया; कि अब वह तिनका नहीं, तूफ़ान का एक भाग है, और तूफ़ान उसके बिना अधूरा है, और तूफ़ान की ताक़त उसके बिना छोटी है।

और तूफ़ानने तिनकेके मनकी बात ,भाँप ली, और कहा—"अपने आपको धोखा न दे। मैं चाहूं, तो तुझे ज़मीनपर पटक सकता हूं, और तुझे खोकर मेरी शक्ति में ज़रा भी कमी न आएगी।"

लेकिन अब तिनका अपने आपको समझ चुका था। उसने मुस्कराकर कहा—"मैं पेड़ नहीं हूं, पेड़ की बड़ाई उसकी कमज़ोरी है। मैं तिनका हूं, मेरी कमज़ोरी मेरी बड़ाई है। और मैं उड़ना जानता हूं, और मैं उड़ रहा हूं, और तेरी सत्ता में यह साहस नहीं, कि जीते जीं मुझसे मेरी उड़ान छीन सके।"

तूफ़ानने तिनकेपर अपने क्रोधकी सारी शक्ति ख़र्च कर दी, मगर वह तिनकेको ज़मीनपर न गिरा सका। और तिनका मुस्कराता रहा, और तूफ़ानके तेवरोंके साथ खेलता रहा, और अपने आपको तूफ़ान का भाग समझता रहा।

और तूफ़ान थक गया, हार गया, रह गया। और तब उसने समझा, कि उसकी शक्ति तिनके के सामने बेबस है।

और वह सोचता था, जो पेड़को गिरा सकता है, वह तिनके को क्यों नहीं गिरा सकता ? क्या तिनका पेड़से भी बड़ा है।

इसी समय तूफ़ानने देखा, कि तिनका ज़मीन की तरफ़ जा रहा है। तूफ़ानने ख़ुशीकी किलकारी मारी, और कहा— " तिनके ! मैंने तुझे गिरा दिया।"

मगर दूसरे ही क्षणमें तूफ़ानको ऐसा मालूम हुआ, कि वह आप भी बदल रहा ह, और उसकी जवानी समाप्त हो रही है, और उसपर उसका बुढ़ापा आ रहा है।

और जबतक तिनका ज़मीनपर गिरे, तूफ़ान का बुढ़ापा भी समाप्त हो चुका था।

एक शब्दका विकास

अमीरने खुश होकर नौकरसे कहा—“मैं तुझे इनाम दूंगा।” मगर जब इनाम देने का समय आया, तो अमीरका दिल बेईमान हो गया, और उसने इनाम देनेसे साफ़ इन्कार कर दिया।

और लोगोंने बेईमानी की यह बात सुनी, तो दुःखी होकर कहा—“यह आदमी कितना झूठा है!”

तीस वर्ष बीत गए।

अब उस अमीरका बेटा घरका मालिक था, और उसके पास नौकर बापका नौकर बेटा काम करता था। और एक बार ऐसा हुआ, कि उस नौकर के बेटेने भी सेवाका कोई सुखद काम किया, और अमीर के बेटेने भी इनाम देनेकी प्रतिज्ञा कर ली। मगर जब इनाम देनेका समय आया, तो उसने कहा—“तूने हमें खुश किया था, हमने तुझे खुश कर दिया, अब और क्या मांगता है?”

और लोगोंने वचन-तोड़ने का यह बहाना सुना, तो हैरान होकर बोले—"यह आदमी कितना चालाक है !"

तीस वर्ष और बीत गए।

अब अमीर का पोता घरका मालिक था, और नौकरका पोता घरका नौकर था। और मालिक वैसा ही था, जैसे मालिक होते हैं, और नौकर वैसा ही था, जैसे नौकर होते हैं। और एक बार इस नौकर ने भी कोई ऐसी सेवा की, कि अमीर बाप के बेटे और अमीर बाबा के पोते की खुशी उसके बससे बाहर हो गई, और उसके मुंहसे निकल गया—"हम एक महीना बाद तुझे खुश करेंगे, और इनाम देंगे।" मगर जब एक महीना गुज़र गया, और नौकर ने मालिक को प्रतिज्ञा याद दिलाई, तो मालिक ने अपने कुल की रीत का अनुसरण किया और कहा—"इनाम न मांग। इनाम मांगना गुलामोंका काम है। मगर तू गुलाम नहीं है; तू हमारे दोस्तका बेटा है। अगर तू इनाम लेगा, तो दुनियामें तेरा सिर झुक जाएगा, और हमारा दिल दुखेगा।"

और लोगोंने यह घटना सुनी, तो मुस्करा कर कहा—"यह आदमी कितना नीतिवान है।"

मेरी बड़ाई

जिस दिन मैंने मोटरकार ख़रीदी, और उसमें बैठकर बाज़ारसे गुज़रा, उस दिन मुझे ख्याल आया–"यह पैदल चलनेवाले लोग बहुत छोटे हैं, और मैं बहुत बड़ा हूं।"

और जब शामको मैं और मेरी बड़ाई घर आए, तो हम दोनों खुश थे, और हमारे चेहरे सीढ़ियोंके अँधेरेमें चमकते थे।

और जब हम सोफ़ेपर बैठ गए, तो मेरी छोटी बेटी एक कुरसी घसीट कर मेरे पास ले आई, और उसके ऊपर खड़ी होकर बोली—"मैं तुमसे बड़ी हूं। और तुम मुझसे छोटे हो।"

और मेरे दिलमें यह बात चुभी, और मैंने मुड़ कर अपनी बड़ाई की तरफ़ देखा। मगर वह बिजलीके प्रकाशमें ग़ायब हो चुकी थी।

सन्तान

सवेरे उसके घर बेटा पैदा हुआ। रातको उसके द्वारपर दो देवता आए, और बातें करने लगे।

एक ने कहा—"मेरा ख्याल है, अब यह आदमी गया। यह बच्चा इसे धीरे धीरे मार डालेगा।"

दूसरे ने कहा—"मेरा ख्याल है, अब यह आदमी आदमी बना। यह बच्चा इसे अमर कर देगा।"

पहला बोला—"तुम भूल करते हो। यह बच्चा इससे इसकी स्त्रीको भी छीन लेगा।"

दूसरा बोला—"यह तुम्हारा वहम है। यह बच्चा इसकी स्त्रीके दिलको शांत और प्यारको गहरा बना देगा।"

पहले ने कहा—"यह बच्चा बापकी जवानी खाकर जवान होगा, बापका बुढ़ापा खाकर बूढ़ा होगा, उसकी पसीने की कमाई खाकर ऐश करेगा।"

दूसरे ने कहा—"यह बच्चा बापकी जवानीको उसका बचपन देगा, उसके बुढ़ापेको उसकी जवानी देगा, मौतके बाद उसे अपनी रगोंमें जीता रखेगा।"

दोनों देवता वापस मुड़े। जब जुदा होने लगे, तो एकने कहा—"याद रखो, जब भगवान किसीपर खुश होता है, तो उसे सन्तान दे देता है।"

दूसरे ने जवाब दिया—"न मेरे भाई। जब भगवान किसीपर खफ़ा होता है, तो उसे औलाद दे देता है।"

करोड़ों साल बीत गए हैं, मगर आकाश के अमर देवताओं का झगड़ा अभी तक समाप्त नहीं हुआ।

बहन भाई

मैंने कांगड़े की घाटीमें एक लड़की को देखा, जो चार सालकी थी, और दुबली-पतली थी। और एक लड़के को देखा, जो पांच सालका था, और मोटा ताज़ा था। और यह लड़की उस लड़के को उठाए हुए थी, और चल रही थी।

और लड़की के पांव धीरे धीरे उठते थे, और उसका रास्ता लम्बा था, और उसके माथेपर पसीनेके मोती चमकते थे। और वह हांप रही थी।

और मैंने लड़की से पूछा—"क्या यह लड़का भारी है?"

लड़की ने पहले हैरान होकर मेरी तरफ़ देखा, फिर मुस्कराकर लड़के की तरफ़ देखा, फिर जवाब दिया—"नहीं, यह भारी नहीं है। यह तो भाई है।"

ऊंट, चींटी और पहाड़

एक दिन एक ऊंटने एक चींटी को देखा, और अपने घमंड को सम्बोधन करके कहा—"मुझे यह मालूम न था, कि दुनियामें इतने छोटे जीव भी हैं। और शुक्र है, मैं इतना छोटा नहीं हूं।"

दूसरे दिन उसने एक पहाड़ को देखा, और अपने विनय को सम्बोधन करके बोला—"दुनियामें छोटा कोई नहीं है, सिवाय उसके जो अपने आपको बड़ा समझे। और शुक्र है, मैं अपने आपको बड़ा नहीं समझता।"

जीत-नगरकी जवानी

आधी रातको मधुपुरीका दरवाज़ा खुला, और सौन्दर्य अपनी विजय-यात्रापर रवाना हुआ।

और उसके साथ चांदकी गोरी किरणें थीं, और फूलोंका जवान जादू था, और परिस्तानके प्यारे प्यारे सुपने थे। और उसकी आंखोंमें, होटोंमें और अधखुली पिंडलियोंमें वृन्दाबनकी बहारें और मथुरा की मस्तियां थीं।

मगर खुद उसके हाथ ख़ाली थे। और वह जानता था, कि उसका ख़ाली हाथ होना ही उसका सबसे बड़ा हथियार है।

वह एक पहाड़की चोटीपर खड़ा होगया, और चारों तरफ़ देखकर मुस्कराया, और जिस जिस जवान दिलने यह चित्त-चोर मुस्कराहट देखी, वही उसके सामने अपनी सारी शक्ति और सारी मरज़ीके साथ झुक गया।

और चांदकी गोरी किरणोंने, फूलोंके जवान जादूने और

परिस्तान के प्यारे प्यारे सुपनोंने कहा—"सौंदर्य सबको जीत सकता है, सौंदर्यको कोई नहीं जीत सकता।"

थोड़ी दूर जोत-नगर की जवानी अपने खुरदरे बिस्तरेपर बेसुध पड़ी सो रही थी। उसने अभिमानके यह शब्द अपनी नींद में सुने और उठकर खड़ी हो गई और बोली—"मैं सौंदर्य और उसके अभिमान दोनोंको जीत सकती हूं।"

यह कहकर वह पूर्णिमाकी गोरी रातमें फूलों और सुपनों के बीचमें तनकर खड़ी हो गई।

सौंदर्य ने उसकी तरफ़ अपनी मुस्कराहटके तीर फेंके, मगर जोत-नगरकी जवानीने उन्हें क्रोधकी आंखोंसे देखा, और उन्हें हवामें आग लग गई।

और सौंदर्यने बेसुधीका एक मीठा गीत गाया, मगर जोत-नगरकी जवानीने उसकी तरफ़से अपने कान बहरे कर लिए, और वह गीत हवामें मुरझाकर रह गया।

अब सौंदर्यने जोत-नगरकी इस हटीली जवानीपर अपने गुलाबी होटोंकी गरमीसे हमला किया, मगर जोत-नगरकी जवानीने अपने मुंहसे बेपरवाहीका केवल एक ठंडा शब्द निकाला, और सौंदर्यकी गरमी सौंदर्यके होटोंपर बर्फ़की तरह जम गई।

हार-जीतका यह अजीब तमाशा देखकर दुनियाके दो दिलोंने कहा—"जीत-नगरकी जवानी सबको जीत सकती है, उसे कोई नहीं जीत सकता।"

मगर जब वह उसके पास पहुंचे, तो दोनोंमें झगड़ा हो गया। एक कहता था—"यह जवानी नहीं, दानाई है।" दूसरा कहता था—"यह जवानी नहीं, बुढ़ापा है।"

सौंदर्यने उनका झगड़ा देखा, तो धीरेसे कहा—"यह न दानाई है, न बुढ़ापा। यह मौत है।"

पनघट पर

एक दिन पनघटपर दो सखियां मिलीं, और बातें करने लगीं, और उनकी बातें अपने अपने पतिके बारेमें थीं।

एकने कहा—"मेरा पति इतना हँसता है, और इतना बोलता है, कि मेरा सिर भन्ना जाता है।"

दूसरीने कहा—"मेरा पति इतना कम बोलता है, और ऐसा गंभीर है, कि मेरा जी उदास हो जाता है।"

और आसमानके देवताओंने उनकी बातें सुनीं, और उन्हें दया आई, और उन्होंने उन सखियोंके पतियोंके स्वभाव बदल दिए।

और कुछ दिन बाद पनघटपर दोनों सखियां फिर मिलीं, और बातें करने लगीं, और उनकी बातें अपने अपने पति के बारेमें थीं।

एकने कहा—"मेरा पति पहले हँसता था, और बोलता था, और खुश रहता था। जाने अब उसे क्या हो गया है।

अब वह हर समय गुमसुम रहता है, और उसे गुमसुम देखकर मेरा जी उदास हो जाता है।"

दूसरीने कहा—"मेरा पति पहले कम बोलता था, और गंभीर रहता था, और घरमें शान्ति रहती थी। अब जाने उसे क्या हो गया है! अब वह हर समय हँसता है, और हर समय बोलता है और मेरा सिर भन्ना जाता है।"

सुपने

चाँद सूरज और तारोंकी दुनियासे भी परे एक दुनिया है। वहां आदमी नहीं बसते, देवता बसते हैं। और वहां के खेतोंमें अनाज नहीं उगता, गीत उगते हैं। और वहांकी नदियोंमें पानी नहीं बहता, बहारें बहती हैं। और वहांकी रातों में तारे नहीं चमकते, दिल चमकते हैं।

उस दुनियाका नाम सुपनापुरी है—और वहांके वासी हमारी दुनिया को सुपने भेजते हैं।

जब हमारी दुनिया का कोई आदमी अपने एकांत की उदासियों से ऊब जाता है, और रंग और गंधको छूना, पकड़ना और अपने गिर्द लपेटना चाहता है, तो सुपनापुरी के देवता उसके लिए एक रंगीन सुपना भेज देते हैं, और हमारी दुनियाके एक आदमीका ब्याह हो जाता है।

जब हमारी दुनियाका कोई आदमी जवानीमें बचपनकी खोज करता है, और उसकी जवानी उसके आत्माका बोझ बन जाती है, तो सुपनापुरी के देवता उसके नामका एक सुनहरी सुपना रवाना कर देते हैं, और हमारी दुनियाके जीवनमें एक बच्चा आ जाता है।

जब हमारी दुनियाके किसी बूढ़े के हाथ-पांव निर्बल हो जाते हैं, और उसका बुढ़ापा उसके मनका रोग बन जाता है, तो सुपनापुरी के देवता उस बूढ़े का नाम लेकर एक बाँका सुपना हवामें उछालते हैं, और हमारी दुनियामें एक लड़कपन जवान हो जाता है।

जब हमारी दुनिया में कोई जीवन, जीवन के डगर पर चल चलकर थक जाता है, और चाहता है, कि उसके हाथ-पांव में नई शक्ति उभरे, और उसके आत्मामें नई रंगीनियां जागें, तो सुपनापुरी के देवता उसके नाम बुलावेका सुपना भेज देते हैं, और हमारी दुनियाके एक घर में रोना-पीटना शुरू हो जाता है।

और सुपनापुरीमें एक सोया हुआ देवता जाग उठता है और वहांके वासी उस दिन अपने अपने खेतमें जाते हैं— और वहांके अमर गीत उखाड़कर लाते हैं—और वह गीत जागने वालेके सामने बिखेर देते हैं।

मेरी हार

जिस दिन मुझे मेरी हार मिली, उस दिन मेरा दिल खुश हुआ, और उसने मुझसे कहा—" उठकर स्वागत कर। तेरे पास तेरी शक्ति आई है। "

और मैंने दिलकी आवाज़ सुनी, और अपनी हार का स्वागत किया।

और मैंने देखा, कि मेरी हार मेरी दुनियाका दिया, और मेरी रातोंका राग है।

और जब मैं हारता हूं, तो मेरी जीत मुझे अपनी तरफ़ बुलाती है, और मेरी जवानी मेरी रगोंमें जोश बनकर खड़ी हो जाती है। और मेरा दिल मुझसे कहता है—" तू खुश हो, तू अभी ज़िंदा है। "

और मेरी हार मुझे नींदके बिस्तरसे परे रखती है। और मैं जानता हूं, कि नींद ज़िंदगीका रोग है, और यह रोग जिसको पकड़ लेता है, उसकी ज़िंदगी उसपर हराम हो

अगर तूने उसे अपने पांवमें रखा, तो वह तेरी दासी बनेगी और तेरे रास्तोंमें प्रकाश छिड़केगी। लेकिन अगर तूने उसे उसकी जगह न रखा, और उसके सामने घुटने टेक दिए, तो वह तेरे सिर पर चढ़ बैठेगी, और तुझे उस रास्तेपर ले जाएगी, जहां विलाप और विनाश तेरा इन्तज़ार कर रहा है।"

और मैं सुनता गया और मेरा दिल कहता गया—"तेरी जीतके गीत तेरे पड़ोसियोंके लिए हैं। अगर वह गीत उन्होंने सुने, तो तेरा सिर उनमें ऊंचा उठेगा, और उनके हौसले उनके दिलोंमें आंखें खोलेंगे। लेकिन अगर तूने भूल की, और वह गीत खुद सुनने बैठ गया, तो वह गीत तेरे कानोंमें जम जाएंगे, और तेरे कानोंसे दानाई और दूरदर्शिता सुननेकी शक्ति छीन लेंगे।

"और तेरी जीतका रूप दूसरोंके लिए है। अगर वह रूप दूसरोंने देखा, तो तेरा आदर उनमें बढ़ेगा, और उनकी उमंगें उनके सुपनोंमें जागेंगी। लेकिन अगर तूने भूल की, और वह रूप खुद देखने बैठ गया, तो वह रूप तेरी आंखोंका अँधेरा बन जाएगा, और तेरी उमंगें तेरी रगोंमें ठंडी हो कर रह जाएंगी।"

मगर मेरी जीत रूपवती थी, और उसके रूपमें लुभावा

था। मैंने दिलकी आवाज़ न सुनी, और अपनी जीत को अपना मेहमान बनाकर अपने घरमें ले आया।

और मैंने उसे अपने घरकी सबसे अच्छी जगह पर बिठाया, और उससे खुशी और खुशामद की बातें कीं, और उसका रूप देखा, और उसके गीत सुने।

और मेरे पड़ोसी मेरी जीतको देखनेके लिए आए, और बोले—"तुझे मुबारक हो, देवताओंने तेरा रास्ता रोशन किया है।"

और मैं जानता था, कि मेरे पड़ोसी मेरे दोस्त हैं। और जब मैं खुश होता था, तो उनके दिल भी मुस्कराते थे, और जब मुझे तकलीफ़ होती थी, तो उनके दिलोंसे भी धुआँ उठता था।

मगर मेरी जीतने मेरे पड़ोसियोंकी आंखें बदल दीं, और वह मेरे दुखसुखके साथी न रहे। और मेरी जीतने मेरी आंखें भी बदल दीं, और मैं समझने लगा, कि मैं अपने पड़ोसियों में से एक नहीं हूं, उनसे अलग हूं, और मेरी जगह उनसे ऊंची है।

और मैं अपनी जीतके पास इतनी मुद्दत बैठा रहा, कि मेरे पांव पत्थर हो गए, और मेरी हिम्मत मुझे जवाब दे गई।

तब एक दिन मुझे एकाएक मालूम हुआ, कि मेरी जीत भी अपनी जगहसे ग़ायब है।

मनचला

एक गाँवमें एक मनचला रहता था, जो नेक भी था, बद भी था।

मगर उसकी नेकी उसके चेहरेपर थी, और उसकी बदी उसके दिलमें थी।

और उसकी नेकीको गाँवका हर आदमी देखता था, क्योंकि यह नेकी उस फूलके समान थी, जो बाग़ की भूमिके ऊपर खिलता है, और हर आंखको दिखाई देता है।

और उसकी बदी उस काले पत्थरके समान थी, जो दरिया की तहमें रहता है, और किसीको नज़र नहीं आता। मगर दरिया उसे जानता है, और वह पत्थर कभी कभी दरियाके दिलमें चुभता है।

एक दिन मनचला घाटकी तरफ़ गया, और वहां उसने कई जवान और कुँवारी सुन्दरियों को पानी भरते देखा, और उसके दिलकी बदीने उसके इरादेमें आँखें खोल दीं।

तब मनचलेने एक पेड़की ओट में खड़े होकर एक कंकर उठाया, और अपने बुरे विचारमें बांधकर एक नवेली लड़की के कच्चे रूपकी तरफ़ फेंक दिया।

और दूसरे दिन खुद उसकी जवान कुँवारी बेटी घाट पर पानी भरने गई, तो एक दूसरे बदमाशने एक कंकर उठाया, और अपने बुरे विचारमें बांधकर उसकी तरफ़ फेंक दिया।

सांझके समय मनचलेकी बेटीने मनचलेसे कहा—"आज मुझे किसी बदमाशने कंकर मारा है। और मैं चाहती हूं, तू उसे पकड़, और उसकी आंखें खोल।"

और मनचला बोला—"बेटी, दुखी न हो। वह कंकर तुझे किसी दूसरे ने नहीं, खुद मैंने मारा है। मैं अपने आपको समझा दूंगा, और तू फिर कभी मुझसे मेरी शिकायत न करेगी।"

आज और कल

सांझके अँधेरेमें कुम्हारकी दूकानमें नए बर्तन आए, और रात के समय आपस में बातें करने लगे।

घड़ा बोला—"क्यों भाई बर्तनो, क्या तुम जानते हो, हम कल कहां थे और कल कहां चले जाएंगे ?"

सुराही बोली—"सुना है, कल हम मिट्टी के देशमें सोते थे, और कुम्हार हमें जगाकर यहां ले आया है।"

और प्यालेने कहा—"सुना है, जब आदमीका जी हमसे भर जाएगा, तो हमें फिर उसी मिट्टीमें सुला देगा, और अपने मनकी खुशी के लिए नए बर्तन जगा लेगा।"

घड़ेने अपने खोखले सीनेसे ठंडी आह भरी, और कहा— "जब वह हमें जगा लेता है, तो फिर सुलाता क्यों है ?"

सुराही बोली—"कहते हैं, अगर वह हमें न सुलाए, तो हमारी जाग हमारी आंखोंमें कंकर बनकर चुभे, और हमारे दिलकी खुशियां मर जाएं। फिर जिस तरह आज हम नींदको कोसते हैं, उसी तरह कल जाग को कोसें, और उस कुम्हार को

गालियां दें, जिसने जाग को सदा के लिए हमारे साथ कर दिया है। क्योंकि सदा के लिए तो स्वर्ग का साथ भी दिलका रोग है।"

फूलदान चुप-चाप बैठा सुन रहा था। वह बोला—"कुम्हारपर विश्वास करो। कुम्हार वह देखता है, जो हम नहीं देखते, और कुम्हार वह जानता है, जो हम नहीं जानते और कुम्हार जो कुछ करता है, ठीक करता है। कुम्हार के काममें भूल नहीं है।"

दूसरे दिन कुम्हारकी दूकानमें एक साया सा आया। और जब वह साया हटा, तो घड़े और फूलदानने देखा, कि वहां सुराही और प्याला दोनों न थे। और घड़ेने फूलदानसे कहा—"देख लो, निर्दयी कुम्हारने सुराही और प्याले को सुला दिया।"

मगर सुराही और प्याला दोनों एक जलसेमें जागते थे, जहां सुराही शराब पीती थी, प्याला रसीले होंट चूमता था, और उनके आस-पास रौनक़ और रसकी धार थी।

और प्याला सुराहीसे पूछता था—"क्या तुम जानती हो, हम कल कहां थे, और कल कहां चले जाएंगे?"

कबीर की पहचान

एक बार ऐसा हुआ, कि मैं कबीर साहबसे मिलनेके लिए उनके घर गया। मगर वह उस समय घरमें न थे। और मेरे पास इंतज़ार करनेके लिए समय न था।

और उनकी स्त्रीने कहा—"आज हमारा एक पड़ोसी मर गया है, कबीर साहब उसकी अरथीके साथ गए हैं। और उनकी पहचान यह है, कि उनके सिरपर एक जोत है। और उनके चेहरे पर एक चिंता है।"

मगर जब मैं श्मशानमें पहुंचा, तो वहां हर एकके सिरपर एक जोत थी, और हर एकके चेहरे पर एक चिंता थी। और मैंने वापस आकर कबीर साहबकी स्त्रीसे कहा—वहां तो हर एकके सिरपर एक जोत है और हर एकके चेहरेपर एक चिंता है। फिर मुझे कैसे मालूम हो, कि कबीर साहब कौन हैं?"

और कबीर साहब की स्त्रीने जवाब दिया—जाकर श्मशानके

फाटक पर खड़ा रह, और लोगोंके बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर। और विश्वास रख, तू कबीर साहबको पहचान लेगा।

और जब मुर्दा जल गया, और लोग श्मशानके फाटकसे बाहर निकले, तो मैंने देखा, कि सिर्फ़ एक आदमीके सिरपर एक जोत थी, और सिर्फ़ एक आदमीके चेहरे पर एक चिंता थी।

बाक़ी सब जोतें और सब चिंताएं वहीं श्मशानमें मुर्देके साथ ही जल गई थीं।

कालिदास

जब मैं कालिदासकी खोजमें निकला, तो सबसे पहले मैंने उसे एक छोटेसे गाँवमें देखा। वहां वह अपने बापके खेतों में हल चलाता था, और गऊ-भैंसोंके लिए सानी करता था, और उसके सगे-संबंधी उसके नाटक जला जला कर हुक्का पीते थे।

दूसरी बार मैंने उसे एक क़स्बे की पाठशाला में देखा। वहां वह बच्चोंको पढ़ाता था, और अपनी बहन के ब्याह के लिए रुपये जमा करता था, और जब उसके काव्य उसकी तरफ़ देखते थे, तो वह उनकी तरफ़ से मुंह मोड़ लेता था।

तीसरी बार मैंने उसे शहरके एक बैंकमें देखा। वहां वह तीस दिन लोगोंके रुपये गिनता था, इकतीसवें दिन अपनी तंख्वाहके रुपये गिनता था, और कभी कभी रातके समय थके हुए दिलसे अपने नाटकोंके पात्रोंको देख लेता था।

और हर बार जब मैंने उससे शिकायत की—"तुम अपना आप क्यों नष्ट कर रहे हो।" तो उसने हर बार एक ही जवाब दिया—"मैं महाराज विक्रमकी राह देख रहा हूं।"

जब मैं बच्चा था

जब मैं अपने बचपनमें रहता था, तो मैं खुश था, और मेरी खुशी सारी दुनियापर फैली हुई थी, और मैं जिधर देखता था, मेरी खुशी उधर ही आकर खड़ी हो जाती थी।

और मैं किसीके आधीन न था, क्योंकि दुनियाकी हर चीज़ मेरे आधीन थी। और जो चीज़ मेरे आधीन न थी, वह दुनियामें न थी।

और मैंने कभी कुरूप न देखा था, क्योंकि दुनियाकी हर चीज़ रूपवती थी। और जो चीज़ रूपवती न थी, वह दुनियामें न थी।

और मुझपर कोई द्वार बंद न था, क्योंकि उस समय तक द्वार तैयार न हुए थे। और मुझपर कोई चीज़ हराम न थी, क्योंकि उस समय तक पाप पैदा न हुआ था, और शरम अभी आंखोंमें जागी न थी।

उस समय जवानी मुझे लोरियां देती थी, और रूप मुझे

झूले झुलाता था, और बुढ़ापा अपनी मुस्कराहटें मेरे पांव तले बिछा बिछाकर खुश होता था।

उस समय मेरी आंखोंमें तारे खेलते थे, और मेरे होंटोंपर फूल उगते थे, और मेरे मुंहसे जो आवाज़ निकलती थी, राग बनकर निकलती थी।

जब मैं चलता था, तो दुनिया नई करवट बदलती थी। जब मैं बोलता था, तो दुनिया नए बाग़ खिलाती थी। जब मैं हँसता था, तो दुनियाके सामने नए रंग और नए राग लहराने लगते थे।

जब मैं जवान हुआ

जब मैं जवान हुआ, तो मैं व्याकुल था, और मेरी व्याकुलता बड़ी थी, और जहां कहीं मैं जाता था, मेरी व्याकुलता मेरे साथ जाती थी।

और मेरी व्याकुलता मुझसे कहती थी—"तू आगे बढ़, और ऊपर उठ, और चारों तरफ़ फैल; क्योंकि तू बड़ा है, और दुनिया में जितना रूप और ज्ञान है, सब तेरा है।"

और मैं आगे बढ़ा, और ऊपर उठा, और चारों तरफ़ फैला। और मैंने संसारके सारे रूप और ज्ञानको अपने आप में देखा, मगर मेरी व्याकुलताको शांति न मिली।

तब मेरी व्याकुलता एक शून्यको ले आई, और इस शून्य ने मुझे पकड़ लिया, और अपने बसमें कर लिया।

और यह शून्य दिनके समय मेरे दिलमें चुभता था, और रात के समय मेरे दिमाग़में चुभता था, और जब मैं सोता था, तो मेरे सुपनोंमें आ आकर मेरे आत्माकी गहराइयों में

चुभता था। और मैं उसे जितना भरता था, वह उतना ही और ख़ाली होता जाता था, और मैं उसे जितना परे हटाता था, वह इतना ही मुझसे और चिमटता था।

और मेरी व्याकुलताने मुझसे कहा—"तेरा शून्य तेरी जवानी है। जिस दिन यह शून्य न रहेगा, उस दिन तेरी जवानी भी न रहेगी, और उस दिन तेरा बुढ़ापा तुझे पकड़ लेगा। और तेरी दुनिया तुझे पीछे छोड़ जाएगी।"

यह सुनकर मैं डरा, और मैंने अपनी व्याकुलता और शून्यकी खुशामद की, और उनसे कहा—"मेरे रास्तों में मेरे साथ रहो, और मेरी जवानी को बचाओ, और मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि तुम्हारी हर एक बात सुनूंगा, और उसपर अमल करूंगा।"

और मेरी व्याकुलता और मेरे शून्यने प्रतिज्ञा की—"तू हमारी बात सुनता रह। हम तेरे साथ रहेंगे।"

मैंने अपना वचन पूरा किया, और जवानीके दोनों साथियोंकी हर एक बात मानी। मगर जवानीके साथियोंने अपना वचन पूरा न किया, और एक दिन सांझके अँधेरेमें मुझे अकेला छोड़कर कहीं चले गए। और मैंने देखा, कि उनके साथ ही मेरी जवानी भी चली गई है!

जब मैं बुड्ढा हुआ

जब मेरे पास मेरा बुढ़ापा आया, तो मैं डरा। और यह डर अँधेरा था, और ठंडा था, और बरफ़ानी रातों की सरदियोंकी तरह मेरी हड्डियोंमें घुसा जाता था।

और मेरा मन कांपता था, और मेरे पांव लड़खड़ाते थे, और मैं सोचता था, यह बुढ़ापा भी बचपन और जवानीकी तरह चार दिन मेरे साथ रहेगा और मुझे ख़राब करके और धोका देकर छोड़ जाएगा।

मगर मेरे बुढ़ापेने मुझे तसल्ली दी, और कहा—"मैं तेरे साथ जीऊंगा, तेरे साथ मरूंगा, और ज़मीनोंपर और आसमानोंमें आज तक किसीने नहीं सुना, कि किसीको बुढ़ापेने छोड़ा हो। बुढ़ापा वफ़ादार है। वह आना जानता है। वह जाना नहीं जानता।"

और मेरे बुढ़ापेने मुझे एक लाठी दी, और इस लाठीने मेरे पांवको ताक़त दी, और मैंने जाना, कि मेरा रास्ता

लम्बा नहीं है।

और मेरे बुढ़ापेने मुझे एक सुरमा दिया और इस सुरमेने मेरी आंखोंको प्रकाश दिया, और मैंने देखा कि मेरी दुनिया अँधेरी नहीं है।

और मेरे बुढ़ापेने मुझसे ज्ञानकी बातें कीं। उसने मुझे वह तूफ़ान दिखाए, जिनके बीचसे मैं गुज़रकर आया था, और वह शून्य दिखाए, जिन्होंने मुझे गुमराह किया था, और वह पत्थर दिखाए, जिनसे मेरे आत्माकी खुशियां टकराई थीं।

और मेरे बुढ़ापेने मुझसे और ज्ञानकी बातें कीं। उसने मुझे वह आग दिखाई, जिसने पानी बनकर मेरा मन जलाया था, और वह चोर दिखाए, जिन्होंने मित्र बन कर मेरा दिमाग़ चुराया था, और वह अँधेरे दिखाए, जिन्होंने रोशनियाँ बनकर मेरे रास्तोंमें अटकावे बखेरे थे।

और बुढ़ापा समझदार और अनुभवी, और दयावान था। उसने मुझे अपनी मित्रताका हाथ दिया, और मेरे रास्तेपर मेरे साथ चला, और उसने मुझसे कहा—" भय और भ्रमको दूर कर। अब तेरी जगह तूफ़ानोंके बियाबानोंमें नहीं, अमन-अमानके मन्दिरमें है। और मैं जानता हूं, अमन-अमानका मन्दिर कहां है? मैं तेरा पथ-प्रदर्शक हूंगा, और

तेरे आत्माको आत्माका कोई कष्ट न होगा। ”

मगर एक दिन ऐसा हुआ, कि मैंने अपनी व्याकुलता और शून्यको देखा, जो मेरे और मेरे बुढ़ापेके पीछे पीछे आ रहे थे। इसपर मेरा दिल जवानीके इन सुपनोंके लिए तड़पा, और मेरी आंखोंने उनमें पुरानी मोहनी देखी।

और मेरे बुढ़ापेने मुझसे कहा—“ जब यह जवानीके सुपने जवानीको लूटते हैं, तो दुनिया रोती है, और दया करती है। मगर जब यह बुढ़ापेको लूटते हैं, तो दुनिया हँसती है, और घृणा करती है। क्योंकि दुनियामें सबसे हास्यजनक बात यह है, कि आदमी बुढ़ापेके हाथ पकड़कर चले, और जवानीके सुपने देखे। ”

चोर

एक दिन एक अमीरके घरमें चोरी हो गई, और उसके दोस्त उसके घर यह देखने गए, कि चोर उसका क्या कुछ ले गए हैं ?

और उन्होंने सुना, कि अमीरके लोहेके संदूक़, और रेशम के कपड़े, और चाँदीके बर्तन, और सोनेके ज़ेवर, और हीरे मोती सब वहीं पड़े हैं।

और उनके मनसे चिन्ता दूर हो गई, और उन्होंने कहा— "परमात्माकी प्रशंसा हो, जिसने चोरोंकी आंखें अंधी कर दीं, और हमारे मित्र का माल-ख़ज़ाना बच गया।

मगर यह किसीको भी ख्याल न आया, कि अपने दोस्तको भी तो देख लें, यद्यपि चोर उसे ही चुराकर ले गए थे और अपने घर का सब से क़ीमती हीरा वही था।

गुलाम

गुलाम शरीफ़ था, और विनयशील था, और उसे शहरके छोटे-बड़े सता सताकर खुश होते थे।

और उसका सिर कभी ऊपर न उठता था, और उसकी जीभ कभी गुस्ताख़ी न करती थी, और लोग जानते थे, कि क्रोध नामकी चीज़ उसकी दुनियामें नहीं है।

और एक दिन अच्छे स्वभावके कुछ लोग गुलामके घर गए। और उनका इरादा यह था, कि जो बुरे स्वभावके लोग गुलामसे बदसुलूकियां करते हैं, वह उनके लिए उससे क्षमा मांगें।

मगर जब वह उसके घर पहुंचे, तो उन्होंने देखा, कि गुलामके हाथमें एक जूता है, और वह उससे अपनी बीमार स्त्रीको और कमज़ोर बेटीको पीटता है, और जब वह कारण पूछते हैं, तो गुलाम बिगड़ता है, और उसका क्रोध और भी पागल हो उठता है।

तिवारी का तोता

काशी की पवित्र नगरीमें एक पंडित तिवारी रहते थे, जिनके पास एक तोता था।

और यह तोता तिवारीके पिंजरेमें रहता था, और तिवारी का दिया हुआ दाना खाता था, और तिवारीसे और उसके घरवालोंसे तिवारीकी ज़बानमें बातें करता था।

एक दिन एक जंगली तोता आकर उसके पिंजरेके सामने बैठ गया, और बोला—"क्यों भाई पंछी, तू कौन है, जिसकी सूरत मुझसे मिलती है, जिसका स्वभाव मुझसे नहीं मिलता, और जिसे किसीने यहां क़ैद कर रखा है।"

पिंजरेके तोतेने जवाब दिया—"मैं भी तुझ जैसा तोता हूं, और मेरा रंग भी तेरे रंगकी तरह हरा है, और मेरी चोंच भी तेरी चोंच की तरह मोटी है। और फ़र्क़ सिर्फ़ यह है, कि तू जंगलमें रहता है, और मैं इस मकानमें रहता हूं। और मेरा मकान मज़बूत है, और तेरे जंगलमें ख़तरे हैं।"

जंगलका तोता—"तुझपर लानत हो, तेरी आज़ादीकी रग मुर्दा हो चुकी है, और तेरी आंखें अंधी हो गई हैं। वर्ना तू इस पिंजरेकी तारीफ़ न करता, जिसने तेरी देह ही को क़ैद नहीं किया, तेरे आत्माको भी क़ैद कर लिया है। और मैं तुझे जंगलसे यह बतानेके लिए आया हूं, कि तू अभागा है।"

पिंजरेका तोता—"तेरी बातें मेरी समझसे बाहर हैं, फिर भी मैं तेरी बातों को अपने दिलमें टटोलूंगा। तू मुझे समझा, मैं क्यों अभागा हूं, और वह कौनसा दुर्भाग्य है, जिसे तेरी आंख देखती है, मेरी आंख नहीं देखती।"

जंगलका तोता—"तेरा घर तेरा अपना बनाया हुआ नहीं है, न उसके दरवाज़ेपर तेरा अख्तियार है। और तूने अपना मरना-जीना किसी दूसरेके हाथमें सौंप रखा है। यह तेरा दुर्भाग्य नहीं, तो और क्या है? मगर तेरा इससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है, कि तूने कभी खुले आसमान तले पंख नहीं फैलाए, और कभी खुली हवामें सांस नहीं लिया, और कभी अपने रास्ते आप नहीं ढूंढे। तू ने कभी मौत का सामना नहीं किया, इस लिए तूने कभी जीवन के मज़े नहीं लूटे। तू हर समय अपने मालिक के मुंह की तरफ़ देखता है? और तेरे लिए तेरी मरज़ी कोई चीज़ नहीं—तेरी मरजी वह है, जो तेरा मालिक चाहे। सो तेरा मालिक

और तेरा पिंजरा तेरी दुनियाकी सबसे बड़ी मुसीबत है।"

पिंजरेका तोता—"मैं तो समझता हूं, मेरा मालिक मुझपर मेहरबान है, और यह मेरी खुश क़िसमती है, कि उसने मुझे यह घर बना दिया है। वर्ना कौन मुझे पानी पिलाता? कौन मुझे दाना खिलाता? कौन रातके जाड़े और अँधेरे में मेरी रक्षा करता? और मेरे पड़ोसमें बिल्लियां बहुत हैं, जिनके मुंह में दांत हैं, पंजोंमें नाखुन हैं, दिलमें बेरहमी है। वह मुझे खा जातीं।"

जंगलका तोता—"भगवान करे, तेरे लिए तेरे जीवनके रास्ते बंद हो जाएं, तू यह क्यों नहीं समझता, कि तू यहां क़ैद है, और इस क़ैदमें तुझसे तेरा आत्मा भी बेगाना हो गया है।"

पिंजरे का तोता—"मैं क़ैद नहीं हूं। मैं जब चाहूं, पिंजरेमें घूम सकता हूं, पंख फैला सकता हूं, सीटियां बजा सकता हूं। मुझे कोई नहीं रोकता, मेरे पिंजरेमें मेरा राज है। फिर मैं क्योंकर मान लूं, कि मैं गुलाम हूं, और मेरा घर मेरा क़ैदखाना है?"

जंगलका तोता—"इसलिए, कि तू मालिक की बात सुनता है, और मालिक की बोली बोलता है। सिर्फ़ एक दिन अपने मालिक की बात न सुन, और उसकी बातका उसकी बोलीमें जवाब न दे, और फिर देख, क्या होता है,"

पिंजरेका तोता—"बहुत अच्छा! आज मैं किसीकी

बात न सुनूंगा, सिर्फ़ अपने मनकी बात सुनूंगा। और आज मैं किसीकी बोली न बोलूंगा, सिर्फ़ अपनी बोली बोलूंगा, जो मेरे माँ-बाप बोलते थे, जो तू बोलता है, जो मेरे मांस और हड्डियोंकी बोली है।"

इसके बाद जब जंगलका तोता दूसरे दिन आनेकी प्रतिज्ञा करके चला गया, तो पिंजरेका तोता हैरान था, और यह हैरानी उसके दिलपर और दिमाग़पर, और आंखोंकी पलकोंपर छाई हुई थी।

और जब पंडित तिवारीका जवान बेटा आकर तोतेसे बातें करने लगा, तो तोते ने उसकी बातका जवाब न दिया, और अपने दिलमें कहा, मैं इसकी बातका क्यों जवाब दूं? मैं इसका गुलाम नहीं हूं।

और पंडित तिवारीके बेटेने लोहेकी एक सीख़ लेकर पिंजरेमें डाली, और वह सीख़ तोतेकी गरदनमें चुभोकर कहा—"बोलता है, या नहीं?"

तोतेने जवाब न दिया, और गरदनपर घाव खाकर एक तरफ़ हट गया।

और पंडित तिवारीके बेटेने उसे फिर सीख़ चुभोई, और कहा-"बोलता है, या नहीं?"

तोतेने अब भी जवाब न दिया, और छातीपर घाव खाकर

दूसरी तरफ़ हट गया।

और पंडित तिवारीके बेटेने तोतेको बार बार सीख़ चुभोई और तोतेने हर बार उसकी बातका आदमीकी बोलीमें जवाब देनेसे इन्कार किया, और अपने शरीरपर घाव खाता रहा।

दूसरे दिन जब जंगलका आज़ाद तोता पिंजरेके क़ैदी तोतेसे मिलने आया, तो पिंजरेका तोता मरा पड़ा था, और उसके क़ैदख़ाने का दरवाज़ा खुला था।

जंगलके तोतेने अपनी जंगलकी बोलीमें कहा—"जब ग़ुलाम अपने मालिककी बात नहीं सुनता, तो उसका यही हाल होता है।"

और पंडित तिवारीने अपने बेटेसे कहा—"इस जंगली तोतेको गुलेलसे मारकर उड़ा दो। हमारा तोता इसीने मारा है।"

और मरे हुए तोतेके न मरे हुए आत्मा ने कहा—"इस जंगली तोतेको चूरी दो। इसने एक क़ैदीको छुड़ाया है, और एक मुर्देको ज़िंदा किया है।"

सच की मौत

शुरूमें जब सच ज़मीनपर उतरा, तो उसे नीले आसमान के देवताओंने आशीर्वाद दिया, और कहा—"तेरा काम बोलना है। तू जब तक बोलता रहेगा, जीता रहेगा। और जब तक तू जीता रहेगा, दुनियाकी शोभा खिली रहेगी, और पतझड़ का मौसम ज़मीनकी सख्त मिट्टी तले सोता रहेगा।"

और सच हज़ारों साल तक बोलता रहा, और उसकी आवाज़ आसमानकी हवाओंपर तैरती रही, और दुनियाके बेटे अमन-अमान और सुख-संतोष का जीवन बिताते रहे।

मगर काले सागर के दैत्यने यह देखा, तो उसके दिलको दुःख हुआ, और उसने सच को चुप कराने के सैंकड़ों यत्न किए।

मगर सच बोलता रहा। और काले सागर का दैत्य अपने मनमें घबराता रहा। और नीले आसमानके देवता यह देख देखकर खुश होते रहे।

आख़िर एक दिन काले सागर का दैत्य सोनेका एक टुकड़ा लेकर आया, और उसने वह टुकड़ा सच के मुंहपर फैला दिया ।

अब सच देखता था, बोलता न था, और यह उसकी मौत थी । क्योंकि नीले आसमान के देवताओंने कहा था, कि सचका जीवन उसके बोलनेमें है । और जिस दिन वह बोलना बंद कर देगा, उस दिन वह मर जाएगा ।

और जिस दिन सच मरा, उस दिन दुनियाकी शोभा मुर्झा गई, और ज़मीनकी सख़्त मिट्टी तले सोया हुआ पतझड़ जाग उठा, और दुनियाके बेटोंको काले सागर की बीमारियोंने पकड़ लिया ।

मज़दूर

एक दिन एक पहाड़ी रास्तेमें एक साधु और एक विद्यार्थी और एक राजा की मुलाक़ात हो गई। और उनके साथ उनकी बड़ाईयां थीं। और बड़ाईयों के साथ उनके अभिमान थे। और उनके पांव ज़मीनसे एक एक गज़ ऊंचे थे।

साधुने कहा—दुनियामें सबसे बड़ा मैं हूं। मुझे किसीकी परवाह नहीं। मेरी परवाह मेरे भक्त करते हैं, और मेरा भगवान मुझसे खुश रहता है।"

विद्यार्थीने कहा—"दुनियामें सबसे बड़ा मैं हूं। मेरे लिए दुनियामें कोई चिन्ता नहीं। मेरी हर चिन्ता को मेरे मा–बाप सँभालते हैं, और हर सुबहका सूरज मुझे ज्ञानके रास्तोंपर आगे देखता है।"

राजाने कहा—"दुनियामें सबसे बड़ा मैं हूं। मेरे लिए तक़दीर ने कोई काम पैदा नहीं किया। मेरा हर काम मेरी प्रजा करती है, और मेरी शान-शोभा अपने आप बढ़ती

रहती है। और मेरे सामने कोई सिर नहीं उठा सकता। मैं जो चाहूं, कर सकता हूं। मेरे मुंह का बोल मेरे देशका क़ानून है। और इसे हर कोई जानता है।"

पाससे एक मज़दूर गुज़र रहा था, और उसके साथ उसकी परेशानियाँ थी, और वह परेशानियों में भी खुश था। उसने तीनों बेफ़िक्रोंकी बातें सुनीं, और मुस्कराकर कहा— "तुम सब छोटे हो, तुम में बड़ा कोई भी नहीं।

"बड़ा वह है, जो साधु को भक्ति देता है, और विद्यार्थी को बेफ़िक्री देता है, और राजाको शान-शोभा देता है। बड़ा वह है जिसकी हिम्मत पहाड़से भी ऊंची है, और जिसका दिल समुद्रसे भी गहरा है, और जिसका इरादा लोहेसे भी मज़बूत है।"

और साधु और विद्यार्थी और राजा तीनोंको अचरज हुआ और वह बोले—"हमसे बड़ा कौन है? हम तो समझते हैं, दुनिया में हम ही बड़े हैं।"

मज़दूर ने कहा—"मैं भक्त हूं, मैं अपनी भक्ति साधु को देता हूं, और साधु मेरी भक्ति भगवानको दे देता है। मैं बाप हूं, मैं अपनी मेहनत अपने विद्यार्थी बेटे को देता हूं, और वह मेरी मेहनत अपनी किताबोंको दे देता है। मैं प्रजा

हूं, मैं अपनी कमाई राजा को देता हूं, और राजा मेरी कमाई अपनी शान–शोभा को दे देता है। अगर मैं न हूं, तो तुम तीनोंका आसन तुमसे एक दिन में छिन जाए। और दूसरे दिन तुम ज़मीनपर रेंगने लगो।"

और साधु और विद्यार्थी और राजा ने कहा—"हमारे साथ हमारी बड़ाईयां है। अगर तू बड़ा है, तो दिखा, तेरी बड़ाईयाँ कहां है? तेरे पास तो सिर्फ़ परेशानियाँ हैं। और जहां परेशानियाँ हों, वहां बड़ाईयाँ नहीं रहतीं।"

और मज़दूरने जवाब दिया—"मेरी बड़ाई यह है, कि मैंने अपनी बड़ाईयां भी तुम लोगोंको बाँट दी हैं। अगर मैं तुम्हें अपनी बड़ाईयाँ न दे देता, तो तुम आसमान तले सबसे ग़रीब होते, और तुम्हारे दाएं-बाएं बड़ाईयाँ न होतीं, मेरी ज़िंदगीकी परेशानियाँ होतीं। और तुम्हारी आंखोंके आंसू कभी न थमते और तुम्हारी रातों की नींद तुमपर हराम हो जाती।"

यह कहकर मज़दूरने मुंह मोड़ा, और अपने मालिकके खेतोंकी तरफ़ चला गया।

और साधु और विद्यार्थी उसके बारेमें प्यार और आदर की बातें सोच रहे थे। मगर राजा अपने मनमें कह रहा था, यह आदमी भयानक है, इससे इसकी कुछ परेशानियाँ

छीन लेनी चाहिएं। कहीं ऐसा न हो, किसी दिन यह तंग आकर अपनी सारी परेशानियाँ हमारे पीछे लगा दे, और हमारी ज़िन्दगियाँ हमारे सीनोंपर भारी हो जाएं।

और साधु और विद्यार्थी की बड़ाईयाँ सोच रही थीं, क्यों न हम उसीके पास चली जाएं, जिसकी हिम्मत पहाड़से भी ऊंची है, और जिसका दिल समुद्रसे भी गहरा है, और जिसका इरादा लोहेसे भी मज़बूत है।

और मज़दूर अपने खेतमें काम कर रहा था, और उसकी चोटीका पसीना बहकर उसकी एड़ियों तक जा रहा था।

धर्मोपदेशक

धर्मोपदेशकने सवेरके समय लोगोंको उपदेश दिया, और कहा—"आज एकादशीका दिन व्रतका दिन है। जो आज व्रत न रखेगा, उसे पाप पकड़ लेगा, और पापका पुरस्कार बीमारी और कमज़ोरी है। और भगवान चाहता है, आदमी हर बीमारी और कमज़ोरीसे बचे। इस लिए मेरा उपदेश है, कि आज कोई खाना न पकाए। और अगर किसीने पका लिया हो, तो उसे चील-कव्वों और कुत्ते-बिल्लियों के आगे डाल दे।"

और सुननेवालोंमें उसकी स्त्री भी थी। उसके दिलको प्रभावने छुआ, और उसने घर जाकर अपना अध-पका खाना अपने द्वारपर रख दिया। और वह चीज़ें जो धर्मोपदेशक और उसकी स्त्रीके लिए थीं, मुहल्लेके चील-कव्वों और कुत्ते-बिल्लियोंने खाईं। और देखने वालोंने धर्मोपदेशक और उसकी स्त्रीकी तारीफ़ की। और कहा—"यह लोग कितने अच्छे हैं।"

जब धर्मोपदेशकने घर लौटकर यह सब कुछ सुना तो उसे अफ़सोस हुआ, और उसने अपनी स्त्रीसे कहा--" तू कैसी गँवार है, जो इतना भी नहीं जानती, कि उपदेशकका उपदेश दूसरोंके लिए होता है, अपने और अपने घरवालोंके लिए नहीं होता।

" लोगोंका धर्म यह है, कि वह मेरा उपदेश सुनें, और अपने दिलमें बांधकर अपने घर ले जाएं। तेरा धर्म यह है, कि जो उपदेश तू लोगोंमें बैठकर सुने, वह लोगों को ही दे आए। मेरा और तेरा धर्म लोगोंके धर्मसे अलग है।"

आकाश का बेटा

एक बार आकाशने अपना एक बेटा धरतीपर भेजा, और उससे कहा—"तू जैसा है, वैसा ही बना रहेगा, तो मैं अपनी खुशियाँ तुझे भेजता रहूंगा, और तुझे दुनियामें रहकर भी दुनियाकी कोई तकलीफ़ न होगी।"

और जब आकाशका बेटा, धरतीपर उतरा, उस समय वह नंगा था, और उसका दिल उसके चेहरेपर था।

और जो आदमी उसका चेहरा देख लेता था, वह उसका दिल पढ़ लेता था, और आकाशके बेटेको किसीसे शरम न आती थी।

उस समय आकाशके तारे उसकी आंखोंमें मुस्कराते थे; और स्वर्गके सुपने उसके होंटोंपर खेलते थे; और देवताओंकी दुआएं उसके रास्तोंकी रोशनियाँ थीं।

एक दिन दुनियाकी शरमने उसे देखा, और कहा—"तू नंगा है।"

आकाशके बेटेने शरमकी आवाज़ सुनी, और अपने चेहरे

पर एक घूंघट डाल लिया।

दूसरे दिन शरमने फिर कहा—"तू अब भी नंगा है।" और आकाशके बेटेने अपने चेहरेपर दूसरा घूंघट डाल लिया।

तीसरे दिन शरमने फिर कहा—"तू अब भी नंगा है।" और आकाशके बेटेने अपने चेहरेपर तीसरा घूंघट डाल लिया।

और शरम हर रोज़ बोलती गई, और आकाशका बेटा हर रोज़ उसकी आवाज़ सुनता गया, और अपने चेहरेपर नित नया घूंघट डालता गया। यहां तक कि उसका चेहरा पूरे तौरसे ढक गया, और उसकी शरम उसके घूंघटके अंदर छिप कर बैठ गई।

मगर वास्तवमें उसने अपने आपको दुनियासे न छिपाया था, दुनियाकी नयामतों और खुशियोंसे छिपाया था। और उसने घूंघट अपने चेहरेपर न डाले थे, अपने आत्मापर डाले थे।

अब आकाशके तारे उसकी आंखोंमें नहीं मुस्कराते; न स्वर्गके सुपने उसके होंटोंपर खेलते हैं, न देवताओंकी दुआएं उसके रास्तोंकी रोशनियाँ हैं।

अब उसके साथ उसके घूंघट हैं, और घूँघटोंका बोझ है, और घूंघटोंका अँधेरा है। और इस बोझ और अँधेरेके साथ उसकी शरम है, और शरम का बोझ और अँधेरा घूंघटोंके बोझ और अँधेरेसे भी ज्यादा है।

दुनियादार

शामको जब दुनियादार अपने दफ्तरसे लौटा, तो उसके मेज़पर तीन पत्र पड़े थे। और यह तीनों पत्र उसके दोस्तोंके थे, और यह दोस्त उस के रोशन दिनों और अँधेरी रातों के साथी थे, और उनके दिलोंमें झूठ न था।

और उसने पहले अपनी स्त्रीके साथ मिलकर चाय पी, इसके बाद तीनों पत्रोंका जवाब लिख दिया।

उसने एकको लिखा—"आपके पुत्र की मौतका समाचार पढ़कर मनपर बिजली सी गिर पड़ी, और खाना-पीना हराम हो गया।"

उसने दूसरेको लिखा—"तुम्हारे ब्याह की ख़बर पढ़कर ऐसी खुशी हुई, जैसे यह ब्याह तुम्हारा नहीं, मेरा है। आज इस खुशी में दूना खाना खाऊंगा।"

उसने तीसरे को लिखा—"मैं राय साहबसे सिफ़ारश कर दूंगा। मगर वह आदमी खरा नहीं, तुम्हारा काम शायद

ही करे। इसलिए ज्यादा भरोसा न रखो। मैंने तुम्हें साफ़ साफ़ लिख दिया है।"

इसके बाद उसने कपड़े बदले, और टैनिसका रैंकट लेकर क्लब को चला गया।

वहाँ राय साहब भी आए थे। उसने उनसे पहली बात यह कही—"एक मित्र ने मुझे आपसे सिफ़ारश करने को कहा है। मगर मैं सिफ़ारश करने के विरुद्ध हूं! इसलिए मैं सिफ़ारश नहीं करता। और मैं जानता हूं, कि जो सिफ़ारश करता है, वह सोसायटीका नियम तोड़ता है।"

राजा

मैंने एक नदीके उस पार एक टापू देखा है, जिसे साधारण लोग कम देखते हैं, और उसके इस किनारे एक शहर देखा है, जिसे हर आदमी देखता है, और उस शहरमें एक राजा रहता है।

और उस शहरका नियम है, कि राजा एक साल राज करे, दो साल राज करे, तीन साल राज करे, चौथे पांचवें साल राज छोड़कर नदी पार के टापू में चला जाए, और फिर अपने राजके शहर में कभी लौट कर न आए।

मेरे सामने कई राजे आए, और नदीपारके टापूमें चले गए। और जब उनकी विदाईका दिन आता था, तो वह रोते थे, और उनके मनकी आग उनकी आंखोंका पानी बन जाती थी। और उन्हें वहां रोक लेनेकी किसीमें ताक़त न थी

और एक बार ऐसा हुआ, कि एक बुद्धिमान राजा राज

सिंहासन पर बैठा, और उसने सोचा—"मैं क्या करूं, कि विदाई के दिन मुझे तकलीफ़ न हो, और नदीपारके टापूमें जाकर मुझे अपने राजके शहरकी याद न आए।"

उसने एक दिन सोचा। उसने दो दिन सोचा। उसने तीन दिन सोचा। चौथे दिन उसे रास्ता सूझ गया।

और उसने अपने आराम की चीज़ें नदीपार के टापूमें भेजनी शुरू कर दीं। आज एक चीज़ भेज दी, कल दूसरी चीज़ भेज दी, परसों तीसरी चीज़ भेज दी।

इस तरह दिन गुज़रते गए। इस तरह राजाके आराम की चीज़ें नदीपार के टापूमें पहुंचती गईं।

और जब तीन साल बीत गए, और राजाकी विदाईका दिन आया, तो उसे ज़रा तकलीफ़ न हुई, और उसके मनकी आग उसकी आंख का पानी न बनी।

वह खुश खुश अपने महलसे निकला, और जो नाव उसे नदीपार ले जानेको किनारे पर खड़ी थी, उसमें खुश खुश बैठ गया।

यद्यपि उसके दरबान और दरबारी सबके चेहरोंपर मुरदनी थी।

मेरे तीन जन्म

मैं परसों जोगी था, और मेरा दिल मेरे बसमें था, और पापके काले विचार मेरे जीवन में कहीं दूर दूर तक भी दिखाई न देते थे।

मैं कल राजा था, और मेरी मरज़ी बड़ी थी, और दुनिया मेरे सामने सिर झुकाकर चलती थी।

मैं आज ग़रीब हूं, और कमज़ोर हूं, और बीमार हूं। मेरा काम अपनी आग में जलना, और कराहना, और दांत पीसना है। और नीले आसमान तले मेरा अपना कोई नहीं है। मैं अपने रास्तोंमें अकेला हूं।

अहँकार

जब आदमी पदा हुआ, उस समय किसी शक्तिने उसके कानमें कई बातें कही थीं। उनमें एक यह थी—"दुनिया में तुझ जैसा कोई नहीं है। तू अद्वितीय है।"

और आदमी सब कुछ भूल गया है, सिर्फ़ यह बात नहीं भूला—वह अपने आपको हर समय और हर जगह अद्वितीय समझता है।

मगर वह सिर्फ़ अपने आपको अद्वितीय समझकर ही चुप नहीं रह जाता। वह चाहता है, और लोग भी उसे अद्वितीय समझें।

और उसके लिए दुनियाकी राहें तंग हो जाती हैं, और ज़िंदगी सिकुड़कर छोटी हो जाती है, और लड़ाई झगड़ा खड़ा होकर लोगों को अपनी तरफ़ बुलाता है।

चार कलाकार

जब चारों खेल चुके, तो बाग़की घासपर बैठ गए, और बातें करने लगे, और उनकी बातें उनके आनेवाले दिनोंके बारे में थीं।

एक लड़केने कहा—"जब मैं बड़ा हूंगा, तो कवि बनूंगा, और लोग मेरे गीत सुन सुन कर झूमेंगे।"

दूसरे लड़के ने कहा—"जब मैं बड़ा हूंगा, तो चित्रकार बनूंगा, और लोग मेरे चित्र देख देख कर हैरान होंगे।"

तीसरे लड़केने कहा—जब मैं बड़ा हूंगा, तो मूर्तिकार बनूंगा, और लोग मेरी मूर्तियां देखकर वाह वाह करेंगे।"

चौथी लड़की थी और उसका नाम सुन्दरी था। वह बोली—"मैं तुम्हारे रास्तोंमें तुम्हारे साथ रहूंगी, और तुम्हारी कोशिशोंमें तुम्हारी सहायता करूंगी।"

और तीनों लड़के दिलके मज़बूत और धुनके पक्के थे।

और उन्होंने दिनको दिन न समझा, और उन्होंने रातको रात न समझा, और वह अपने अपने रास्तोंपर बढ़ते गए, और उनके ख्यालकी खूबसूरती और मनकी हिम्मतके सिवाय और कोई उनके साथ न था।

मगर पंद्रह साल बाद जब वह एक प्रदर्शिनीमें जमा हुए, तो उनके साथ उनकी बड़ाईयाँ थीं, और उनके प्रशंसक देशमें दूर दूर तक फैले हुए थे।

और उन्होंनें एक दूसरे से बातें कीं, और एक दूसरे की कलाकी तारीफ़ की, और कहा—"जाने सुन्दरी कहां है? उसने कहा था, वह हमारे साथ रहेगी।"

इतने में एक रूपवती स्त्री आकर उनके सामने खड़ी हो गई, और उसे तीनों दोस्तोंने पहचान लिया।

और अब उनको ख्याल आया, कि सुन्दरी कहीं गई न थी, सदा उनके साथ रही थी। और कविने उसीके रूपके गीत लिखे थे, और चित्रकारने उसीकी जवानीकी तसवीरें बनाई थीं, और मूर्तिकारने उसीके प्यार को पत्थरों से निकाल निकालकर दुनियाके सामने रख दिया था।

झूठ और सभ्यता

एक दिन आदमीके पास झूठ आया।

यह झूठ काला था, और कुरूप था, और उसके कई मुंह थे। और जब वह बोलता था, तो उसके मुंहसे बदी बोलती थी।

उसने आदमीसे कहा: "तू मुझे अपनी दोस्ती दे, और मैं प्रतिज्ञा करता हूं, कि तेरा सिर तेरे पड़ोसियों में ऊंचा उठेगा, और तेरे हाथ तेरे दुशमनोंकी गरदनपर होंगे। और तू ज़मीनपर घासकी तरह फैलेगा, और बीमारी की तरह बढ़ेगा"

और आदमीने पूछा—"पहले यह बता, कि तू कौन है, और दुनियामें तेरा काम क्या है?"

और झूठने सच बोलकर जवाब दिया—"मैं झूठ हूं, और मेरा काम अपने दोस्तों की सहायता करना है। और मैं अपना काम हर हीले निकाल लेता हूं।"

आदमीने यह जवाब सुनकर झूठकी तरफ़से मुंह मोड़ लिया और कहा—"तुझपर धिक्कार हो, यहांसे भाग जा। मेरी

दोस्ती तेरे लिए नहीं है । तू किसी और की खोज कर । "

कुछ दिन बाद आदमीके पास सभ्यता आई ।

और सभ्यता का मुंह चिकना था, और उसकी बातें मीठी थीं, और जब वह बोलती, थी, तो सुनने वालोंके दिल उनके सीनोंमें खुश हो जाते थे,

और उसने आदमीसे कहा—" मेरी दोस्तीका हाथ क़बूल कर, और तू देखेगा कि तेरी कुरसी लोगोंमें ऊंची होगी, और तेरे रास्ते दूसरोंसे चौड़े और रोशन होंगे । और तेरी तारीफ़ दुनियामें फैलेगी । "

और आदमीने पूछा—" पहले यह बता, कि तू कौन है, और दुनियामें तेरा काम क्या है ? "

और सभ्यताने जवाब दिया—" मैं सभ्यता हूं, मैं सभ्य लोगोंके साथ रहती हूं । और मैं उनके टीलों और गढ़ोंको समतल करती हूं और उनके रास्तोंमें दिए जलाती हूं । और जो मुझे अपनाता है, उसे दुनिया अपनाती है । "

आदमीने यह जवाब सुना, तो उसने सभ्यताके लिए अपनी बाँहें फैला दीं, और कहा—" तेरा स्वागत हो, मैंने तेरी दोस्ती मंजूर की । तू मेरे साथ रह, और मेरे रास्ते रोशन कर, और मेरा सिर दुनियामें ऊंचा उठा । "

और सभ्यता आदमीके साथ रही, और आदमीने उसे अपना प्यार दिया और उसे अपने साथ रखा।

और सभ्यताने अपना वचन निभाया, और आदमीके टीले और गढ़े समतल किए, और उसके रास्तोंमें दिए जलाए! और आदमीका सिर दुनियामें ऊंचा उठा, और उसकी तारीफ़ दूर दूर तक फैल गई।

तब एक दिन आदमी को मालूम हुआ, कि सभ्यता सभ्यता नहीं थी, झूठ ही का दूसरा रूप था।

मगर आदमीने उसे फिर भी प्यार किया, और उसे फिर भी अपने साथ रखा। और अब उसमें यह हिम्मत नहीं, कि उसे दुत्कार दे।

साए

एक बार ऐसा हुआ, कि दरिया के ऊपर दो कबूतर उड़े जा रहे थे, और उनके साए दरियाकी लहरोंपर तैरते थे, और आगे बढ़े जाते थे। और उनके चारों तरफ़ पानी ही पानी था।

और एक मछलीने वह साए देखे, और वह हैरान हुई, और वह बोली—"तुम कौन हो? और तुम मेरे पानीके घरमें क्या करने आए हो? जाओ, मेरा घर ख़ाली करो।"

इसपर एक साएने कहा—"यह घर तेरा नहीं है, यह घर हमारा है। और हम इसके मालिक हैं। हम एक-दूसेर की गवाही दे सकते हैं।"

दूसरे साएने कहा—"हम यहां आए नहीं हैं, हम तो सदासे यहीं रहते हैं। और जो जहां सदा रहता है, उसे वहांसे कोई नहीं निकाल सकता।"

और मछलीने मुस्कराकर पूछा—"अगर तुम अपने घरमें

हो, तो कांपते क्यों हो ? अपने घरमें तो कोई नहीं कांपता, सिवाय उसके जो गुलाम हो, या बीमार हो, या पागल हो।"

एक साए ने जवाब दिया—"हम काँपते नहीं हैं, हम नाचते हैं। और हमारे मनकी खुशी हमारे मनमें नहीं समाती।"

दूसरे साएने जवाब दिया—"हम काँपते नहीं हैं, हमारे पांवके बोझसे हमारे घर की ज़मीन हिलती है। और हम जानते हैं, कि हमारा बोझ बहुत है।"

और मछलीने मुस्कराकर पूछा—"तुम्हारा आपसमें संबंध क्या है ?"

एक साया बोला—"हम एक दूसरे के साथी हैं, और हम एक ही तरफ़ देखते हैं, और हम एक ही तरह सोचते हैं।"

दूसरा साया बोला—"मैं देह हूं, यह जान है। यह देह है, मैं जान हूं। और किसीमें हिम्मत नहीं, कि हमें एक दूसरे से अलग कर सके।"

और उधर हवामें एक बाज़ने कबूतरोंपर हमला कर दिया।

और कबूतर इधर उधर भागे, और उनके साए भी इधर उधर गायब हो गए।

अब वहाँ सिर्फ़ मछली थी।

और मछली अपने मनमें सोचती थी—मैं तो पहले ही

समझ गई थी, कि यह काले सुपने दो घड़ीके मेहमान हैं, और मैं अपने पानीके घरकी आप मालिक हूं। और मेरे घरमें सिवाय मेरे....

मगर अभी उसकी बात उसके मनमें पूरी न हुई थी, कि उस पर एक और साएने झपट्टा मारा, और दूसरे क्षणमें वह एक बगुलेकी चोंचमें थी, और बगुला हवामें उड़ा जा रहा था।

और एक साया दरिया की लहरोंपर तैरता था, और आगे बढ़ा जाता था, और उसके चारों तरफ़ पानी ही पानी था।

हमारी और किताबें

सिकंदर—श्री सुदर्शन जी का वह ज़ोरदार और दिलचस्प नाटक जिसे पढ़कर आप झूम उठेंगे। २॥)

खटपट लाल—श्री सुदर्शन जी की सुंदर बालोपयोगी कहानियों का सचित्र संग्रह। जो बच्चा पढ़ना शुरू कर देगा, खाना-पीना भूल जाएगा। १॥)

रस-सागर—उर्दू के नामी कवि श्री सागर निज़ामी की अनमोल उर्दू कविताओं का संग्रह, जिनका एक एक मिसरा एक एक दुनिया है। मुश्किल लफ़्ज़ों के मतलब भी दे दिए गए हैं। ६)

ज्योत्स्ना—बिहार के नेता श्री जगत नारायण लाल एम्. ए. एलएल. बी., एम. एल. ए. (बिहार), सदस्य विधान परिषद, की सुंदर, सुमधुर और भावमय कविताओं का संग्रह। ॥)

प्रकाशकी खोजमें—श्री वीरेन्द्र कुमार एम्. ए. ने जीवन की जटिल समस्याओं पर प्रकाश डालने का सफल प्रयत्न किया है। लगभग २॥)

हिन्द किताब्स लिमिटेड

२६१-२६३ हार्नबी रोड, बम्बई